২৭.সহিহ হাদিসের আলোকে ইমাম মাহদীর পরিচয়

ইমাম মাহদীর নাম

عن عبد الله، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: «لا تذهب الدنيا حتى يملك العرب رجل من أهل بيتي يواطئ اسمه اسمي». رواه الترمذي (2230) وأحمد (3573):

وقال الترمذي: هذا حديث حسن صحيح. وقال الشيخ أحمد شاكر في تعليقه على مسند أحمد (3/494) : إسناده صحيح.

وقال الإمام أبو بكر بن العربي في عارضة الأحوذي 9/ 77 بعد أن ذكر عدة أحاديث في المهدي وصفته وأنه من ولد فاطمة: والذي يصح من هذا كله أنه يملكها رجل من أهل بيته يواطئ اسمه اسمه.

وأورد الإمام القرطبي في التذكرة ص 701 حديث أنس بن مالك الذي أخرجه ابن ماجه (4039) وفيه: «ولا المهدي إلا عيسى ابن مريم» ثم ضعفه، وقال: والأحاديث عن النبي صلى الله عليه وسلم في التنصيص على خروج المهدي من عترته من ولد فاطمة ثابتة أصح من هذا الحديث فالحكم لها دونه.

ونقل القرطبي في التذكرة ص 701 عن أبي الحسن محمد بن الحسين بن إبراهيم السجستاني الآبري قوله: قد تواترت الأخبار واستفاضت بكثرة رواتها عن المصطفى يعني المهدي، وأنه من أهل بيته وأنه سيملك سبع سنين، وأنه يملأ الأرض عدلا، يخرج مع عيسى عليه السلام، فيساعده على قتل الدجال بباب لد بأرض فلسطين، وأنه يؤم هذه الأمة وعيسى صلوات الله عليه يصلي خلفه. وأبو الحسن الآبري هذا وصفه الحافظ الذهبي في

السير 299/16 بقوله: الإمام الحافظ محدث سجستان بعد ابن حبان.

وقال شيخ الإسلام ابن تيمية في منهاج السنة النبوية 254/8: الأحاديث التي يحتج بها على خروج المهدي أحاديث صحيحة، رواها أبو داود والترمذي وأحمد وغيرهم من حديث ابن مسعود وغيره.

وكذلك قال تلميذه الإمام ابن القيم في المنار المنيف ....ص 148: (كذا في تعليق الشيخ شعيب الأرنؤوط على سنن أبي داود: 339/6)

আব্দুল্লাহ বিন মাসউদ রাযি. থেকে বর্ণিত, রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, দুনিয়া ধ্বংস হবে না যতক্ষণ না আমার পরিবার হতে একজন বাদশাহ হবে, যার নাম আমার নামের সাথে মিলবে। -সুনানে তিরমিযি, ২২৩০ মুসনাদে আহমদ, ৩৫৭৩

হাদিসের মান:-

ইমাম তিরমিযি, ইবনুল আরবী, কুরতুবী, ইবনে তাইমিয়াহ, ইবনুল কাইয়িম এবং শায়েখ আহমদ শাকের হাদিসটিকে সহিহ বলেছেন। বরং হাফেয আবুল হাসান সিজিস্তানী বলেন, "রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম থেকে মুতাওয়াতির সূত্রে বর্ণিত হয়েছে যে, মাহদীর আগমণ ঘটবে, সে আহলে বাইত থেকে হবে, সাত বছর রাজত্ব করবে,

যমিনকে আদল-ইনসাফ দ্বারা পূর্ণ করে দিবে।” (সুনানে তিরমিযি, ২২৩০ আরেযাতুল আহওয়াযী, ৯/৭৭ আততাযকিরাহ, পৃ: ৭০১ মিনহাজুস সুন্নাহ, ৮/২৫৪ আলমানারুল মুনিফ, পৃ: ১৪৩ ও ১৪৬ সুনানে আবী দাউদের টীকা, শায়েখ শুয়াইব আরনাউত, ৬/৩৩৯)

পিতার নাম

عبد الله بن مسعود رضي الله عنه: أنَّ رسولَ الله صلى الله عليه وسلم، قال: « لوْ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدنيا إلا يوم واحد لطوّل الله ذلك اليومَ حتى يبعثَ الله فيه رجلاً مِنِّي - أو من أهل بيتي - يواطيء اسمُه اسمي، واسمُ أبيه اسمَ أبي، يملأُ الأرضَ قِسْطاً وعدلاً، كما مُلئت ظُلماً وجَوْراً». رواه أبو داود: (4282).

وقال الشيخ شعيب في تعليقه على سنن أبي داود(6 : 337): صحيح لغيره، وهذا إسناد حسن من أجل عاصم -وهو ابن أبي النجود- فهو صدوق حسن الحديث، وباقي رجاله ثقات. فطر: هو ابن خليفة، وزائدة: هو ابن قدامة، وسفيان: هو الثوري، ويحيى: هو ابن سعيد القطان .... وقال ابن الجوزي في العلل المتناهية 861/2: إسناده حسن. وفي المهدي أحاديث صالحة الأسانيد أن النبي صلى الله عليه وسلم قال: «يخرج مني -ويقال: من أهل بيتي- رجل، واسم أبيه يواطئ اسمه اسمي، اسم أبي ....)

আব্দুল্লাহ বিন মাসউদ রাযি. থেকে বর্ণিত, রাসূল সাল্লাল্লাহু

আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, “যদি দুনিয়ার মাত্র একদিনও বাকী থাকে, তবুও আল্লাহ তায়ালা সেদিনকে দীর্ঘ করতে থাকবেন, যতক্ষণ না তিনি আমার পরিবার হতে একজন বাদশাহ বানাবেন, যার নাম হবে আমার নামের মত আর তার পিতার নাম হবে আমার পিতার নামের মত। সে যমিনকে আদল ও ইনসাফে পূর্ণ করে দিবে, যেরুপ তা অন্যায়- অবিচারে পূর্ণ ছিল।” -সুনানে আবী দাউদ, ৪২৮২; ৫/২১৫ ইসলামী ফাউন্ডেশন।

হাদিসের মান:- ইমাম ইবনে তাইমিয়াহ, ইবনুল কাইয়িম, যাহাবী আলবানী রহ. হাদিসটিকে সহিহ বলেছেন। ইমাম ইবনুল জাওযী, শুয়াইব আরনাউত আব্দুল আলীম বুস্তাভী হাসান বলেছেন। (আলইলালুল মুতানাহিয়াহ, ২/৮৬১ মিনহাজুস সুন্নাহ, ৮/২৫৫ আলমানারুল মুনিফ, পৃ: ১৪৩ ও ১৪৬ সুনানে আবী দাউদের টীকা, শায়েখ শুয়াইব আরনাউত, ৬/৩৩৭ আলমাহদিউল মুন্তাযার, পৃ: ২৭৮)

ইমাম মাহদীর বংশপরিচয়

أم سلمة رضي الله عنها قالت: سمعتُ رسولَ الله صلى الله عليه وسلم يقول: «المهدِيُّ من عِترتي من ولدِ فاطمةَ». أخرجه أبو داود (4284) وقال الشيخ شعيب في تعليقه على سنن أبي داود: إسناده ضعيف لضعف زياد بن بيان. قال البخاري في "تاريخه

الكبير" 3/ 346: في إسناده نظر، ونقله العقيلي في "الضعفاء" 2/ 76 عن البخاري وأقره عليه. وقال الذهبي في "المغني في الضعفاء": لم يصح خبره. وقال المنذري في "اختصار السنن" 6/ 160 بعد أن نقل كلام العقيلي: وقال غيره: وهو كلام معروف من كلام سعيد بن المسيب، والظاهر أن زياد بن بيان وهم في رفعه.

وقال الشيخ أحمد بن محمد بن الصديق الغماري : سكت عليه الحاكم والذهبي في التلخيص، وهو حديث صحيح أو حسن، كما حكم به الحُفّاظ، إذ رجاله كلهم عدول أثبات، أما سعيد بن المسيب فلا تسأل عن جلالته وإتقانه، فإنه رأس علماء التابعيين وفردهم وفاضلهم وفقيههم.

وأما علي بن نفيل فقد أثنى عليه أبو المليح، وقال أبو حاتم لا بأس به، وذكره ابن حبان في الثقات، ولم يتكلم فيه أحد بجرح.

وأما زياد بن بيان فقال البخاري: قال عبد الغفار: حَدَّثَنَا أبو المليح سمع زياد بْن بيان - وذكر من فضله، وقال النسائي: ليس به بأس، وذكره ابن حبان في الثقات، وقال: كان شيخا صالحا.

وأما أبو المليح الرقي فقال أحمد بن حنبل: ثقة، ضابط لحديثه، صدوق، وقال أبو حاتم: يكتب حديثه. وقال الدارقطني: ثقة. وكذا قال عثمان الدارمي عن ابن معين، وذكره ابن حبان في الثقات.

وأما من دونه فلا نطيل بذكر توثيقهم لكثرتهم وشهرة الحديث عن أبي المليح، فقد رواه عنه عبد الله بن جعفر الرقي، وأحمد بن عبد الملك وعبد الله بن صالح، وعمرو بن خالد الحراني، فحال سند الحديث على ما ترى من الجودة والصحة، فالحديث صحيح خصوصا مع انضمام الشواهد. (إبراز الوهم المكنون من

.(كلام ابن خلدون، ص: 500 ط. الترقي، 1347 هـ
وقال الشيخ عبد العليم البستوي بعد تفصيل طرق الحديث وبيان
إذا نظرنا في رجال الإسناد لا نرى فيهم : أحوال رجاله
مغمزا، فكلهم من الذين يُحتج بأمثالهم لدى العلماء، أما كلام
العقيلي في علي بن نفيل بأنه لا يُتابع عليه، فلا حاجة إلى
المتابعة. وأما قول البخاري في ترجمة زياد بن بيان: في إسناده
نظر فليس جرحا في الراوي، ولكنه يرى النظر في إسناد
الرواية، ولم أجد من فسَّر وجه النظر هذا سوى ما أشار إليه
ابن الجوزي من أنه كلام معروف لسعيد بن المسيب، وأن زياد
بن بيان وهم في رفعه، وذكره المنذري أيضا دون أن يسمي
قائله، وسيأتي كلام ابن المسيب هذا في الآثار (برقم 17)
وإسناده بمجموع طرقه حسن. إذن فليس هو أحسن حالا من هذا
الإسناد حتى يكون علة لتضعيف هذا الحديث. ولا منافاة بين
الروايتين، فهذا القول من الأمور الغيبية التي لا يقول بها ابن
المسيب رحمه الله إلا إذا كان عنده خبر صحيح من الصادق
الأمين صلى الله عليه وسلم، لا سيما، وأن ابن المسيب لم
يعرف برواية الإسرائيليات، ولا الأخذ من أهل الكتاب، فقول
ابن المسيب جاء جوابا على استفسار عن المهدي، وهل هو حق
أم لا، فأوضح بأنه حق، وأنه من ولد فاطمة. وجاءت رواية
علي بن نفيل هذه، فبينت الخبر الذي اعتمد عليه ابن المسيب
.رحمه الله في فتاواه، فكلا الخبرين عنه صحيح، والله أعلم
وقد سكت عليه أبو داود، وقال في رسالته إلى أهل مكة: وما لم
.أذكر فيه شيئا فهو صالح، وبعضها أصلح من بعض
.وأورده السيوطي في الجامع الصغير ورمز له بالصحة
وقال العزيزي في السراج المنير بشرح الجامع الصغير إسناده
.حسن

وقال الألباني في سلسلة الأحاديث الضعيفة والموضوعة: هذا سند جيد رجاله كلهم ثقات، وله شواهد كثيرة ...

উম্মে সালামাহ রাযি. হতে বর্ণিত, রাসুল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, "মাহদী আমার ঔরসজাত ফাতেমার বংশ থেকে হবে।" -সুনানে আবু দাউদ, ৫/২১৫।

হাদিসের মান:- ইমাম বুখারী, হাফেয উকাইলী, মুনযিরি ও যাহাবী রহ. হাদিসটিকে যয়ীফ বলেছেন। শুয়াইব আরনাউত এ মতটিই গ্রহণ করেছেন। আল্লামা সিরাজুদ্দীন আযীযী (মৃ: ১০৭০) শায়েখ আহমদ গুমারী, (মৃ: ১৩৮০) শায়েখ আলবানী ও ডক্টর আব্দুল আলীম বুস্তাভী (মৃ: ১৪৩৭ হি.) হাদিসটিকে হাসান বলেছেন। -ইবরাযুল ওয়াহমিল মাকনুন, পৃ: ৫০০ আলমাহদিউল মুন্তাযার, পৃ: ২২৬

মূলত হাদিসটির সনদ হাসান পর্যায়ের। তবে হাদিসের রাবীদের মাঝে মতভেদ হয়েছে। কেউ হাদিসটিকে রাসুলের হাদিস রুপে বর্ণণা করেছেন। কেউ তাবেয়ী সাঈদ বিন মুসাইয়িবের নিজস্ব বাণীরুপে। তবে হাদিসটি রাসুলের বাণী হোক বা সাঈদ বিন মুসাইয়িবের সর্বাবস্থায় তা দলিল হওয়ার যোগ্য। কেননা ইমাম মাহদি ফাতেমা রাযি. এর সন্তান হওয়া ভবিষ্যতের বিষয়, যা সাঈদ বিন মুসাইয়িব আন্দাযে ধারণা করে বলতে পারেন না। বরং এ বিষয়টি

তিনি কোন সাহাবীর সূত্রে রাসুল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের হাদিস থেকে জেনেছেন এটাই স্বাভাবিক। তবে তিনি সূত্র উল্লেখ না করে এবং রাসুলের বাণী হিসেবে না বলে এমনিই বলে দিয়েছেন। তো এটা বেশি থেকে বেশি সাঈদ বিন মুসাইয়িবের মুরসাল হাদিস হবে। আর সাঈদ বিন মুসাইয়িবের মুরসাল হাদিসও মুহাদ্দিসদের নিকট গ্রহণযোগ্য। (দেখুন, আততামহিদ, হাফেয ইবনে আব্দুল বার, ১/৩০ আলমুকিযাহ, হাফেয যাহাবী, পৃ: ৩৮ কাওয়ায়েদ ফি উলুমিল হাদিস, যফর আহমদ উসমানী, পৃ: ১৫১)

ডক্টর আব্দুল আলীম বুস্তাভী রহ. বলেন, সাইদ বিন মুসাইয়িব কখনো এটাকে রাসুলের হাদিস হিসেবে বর্ণণা করেছেন আর কখনো তার নিকট মাহদির বিষয়ে জানতে চাওয়া হলে তিনি সূত্র উল্লেখ না করে ফতোয়াপ্রদানের মত বলে দিয়েছেন যে, মাহদী ফাতেমার সন্তানদের মধ্য থেকে হবে। তাই যারা হাদিসটিকে রাসুলের হাদিস হিসেবে বর্ণণা করেছেন তাদেরটাও সহিহ আর যারা সাইদ বিন মুসাইয়িবের নিজস্ব বাণী হিসেবে বর্ণণা করেছেন তাদেরটাও সহিহ। -আলমাহদিউল মুন্তাযার, পৃ: ২২৬

তাছাড়া মাহদির ফাতেমী বা সাইয়েদ হওয়ার বিষয়ে

একাধিক হাদিস রয়েছে যার দ্বারা আলোচ্য হাদিসটি আরো শক্তিশালী হয়, সুনানে আবু দাউদে বর্ণিত হয়েছে,

عن أبي إسحاق، قال: قال علي، ونظر إلى ابنه الحسن، فقال: إن ابني هذا سيد، كما سماه النبي صلى الله عليه وسلم، وسيخرج من صلبه رجل يسمى باسم نبيكم صلى الله عليه وسلم يشبهه في الخلق، ولا يشبهه في الخلق، ثم ذكر قصة: يملأ الأرض عدلا. رواه أبو داود، (4290) وقال الشيخ شيعب: إسناده ضعيف لإبهام شيخ أبي داود فيه، وأبو : (6/347) إسحاق -وهو عمرو بن عبد الله السبيعي- رأى عليا رضي الله عنه، ولم تثبت له رواية عنه.

وأخرجه نعيم بن حماد في "الفتن" (1113) عن غير واحد، عن إسماعيل بن عياش، عمن حدثه، عن محمد بن جعفر، عن علي بن أبي طالب. وفي إسناده مبهمون كما ترى.

আবু ইসহাক সাবিয়ী রহ. বলেন, আলী রাযি. হাসান রাযি. এর দিকে তাকিয়ে বলেন, “আমার এ ছেলেকে রাসুল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম সাইয়েদ-নেতা বলেছেন। অচিরেই তার বংশে এমন একব্যক্তি জন্মগ্রহণ করবে যার নাম হবে তোমাদের নবীর অনুরূপ। স্বভাব-চরিত্রে সে নবীজির মতই হবে তবে তার দৈহিক গড়ন নবীজি থেকে ভিন্ন হবে। সে আদল-ইনসাফ দ্বারা পৃথিবীকে পূর্ণ করে দিবে।” -সুনানে আবু দাউদ, ৪২৯০; ৫/২১৭

হাদিসের মান:- হাদিসের রাবী আবু ইসহাক সাবিয়ী রহ. আলী রাযি. এর যমানা পাননি। তাই হাদিসটি মুরসাল। আর আবু ইসহাক সাবিয়ীর মুরসাল হাদিস মুহাদ্দিসদের নিকট যয়ীফ। তাছাড়া ইমাম আবু দাউদ হাদিসের সনদে তার শায়খের নাম উল্লেখ করেননি। বরং এভাবে বলেছেন, حدثت عن هارون بن المغيرة অর্থাৎ আমার নিকট হারুন বিন মুগীরার সূত্রে হাদিস বয়ান করা হয়েছে। (দেখুন, সুনানে আবু দাউদ, তাহকীক শায়েখ শুয়াইব ৬/৪৪৭ তাদরীবুল রাবী, হাফেয সুয়ুতী, ১/২৩২)

তবে হাদিসটি পূর্বে বর্ণিত হাদিসটির শাহেদ-সমর্থক হওয়ার যোগ্য। সুতরাং এ হাদিস ও পূর্বের হাদিস মিলিয়ে প্রমাণ হয়, ইমাম মাহদী সাইয়েদ বা আলী রাযি. এর বংশধর হবেন। কিন্তু যেহেতু হাদিসটি এককভাবে যয়ীফ তাই এই হাদিসের আলোকে ইমাম মাহদী হাসান রাযি. এর বংশধর হওয়া প্রমাণিত হয় না। বরং তিনি হুসাইন রাযি. এর বংশধরও হতে পারেন। যদিও ইমাম ইবনুল কাইয়িম ও ইবনে কাসীর রহ. উল্লিখিত হাদিসের কারণে বলেছেন, “মাহদী হাসান রাযি. এর বংশধর হবেন।” আর এর অন্তর্নিহিত কারণ হিসেবে ইবনুল কাইয়িম উল্লেখ করেছেন, “যেহেতু হাসান রাযি. আখেরাতের সওয়াবের আশায় মুসলমানদের ঐক্যের লক্ষ্যে খেলাফতের দাবী ত্যাগ

করেছিলেন, তাই আল্লাহ তায়ালা এর প্রতিদান স্বরুপ তার বংশধরদের মধ্য হতে মাহদীকে রাজত্ব দান করবেন। এটাই আল্লাহ তায়ালার রীতি, যে আল্লাহর জন্য কোন কিছু ত্যাগ করে আল্লাহ তাকে বা তার বংশধরকে তার চেয়ে উত্তম জিনিষ প্রদান করেন।” -দেখুন, আলমানারুল মুনিফ, পৃ: ১৫১ আননিহায়া ফিল ফিতান, 1/55

ইমাম মাহদীর দৈহিক গড়ন

عن أبي سعيد الخدري، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: المهدي مني أجلى الجبهة، أقنى الأنف، يملأ الأرض قسطا وعدلا، كما ملئت جورا وظلما، يملك سبع سنين. أخرجه أبو داود. (4285) وقال الشيخ شعيب في تعليقه على مسند أحمد(6 : 342) : - جيد بهذا اللفظ، سهل بن تمام بن بزيع وعمران القطان - وهو ابن داور- -وإن كان ضعيفا- متابع حسن الحديث، وقد روي حديثه هذا من وجه آخر حسن في المتابعات، سيأتي ذكره. وذكر ابن الجوزي هذا الحديث في "العلل المتناهية" (1443) ثم قال 2/ 861: لا بأس به. وجود إسناده ابن قيم الجوزية في "المنار المنيف" ص 144. وصححه الحاكم 4/ 557، لكن تعقبه الذهبي بقوله: عمران ضعيف. قلنا: القول قول من قوى هذا الحديث، لأن عمران لم ينفرد به. أبو نضرة: هو المنذر ابن مالك بن قطعة.

وأخرجه الطبراني في "غريب الحديث" 2/ 191 من طريق عفان بن مسلم، والحاكم 4/ 557 من طريق عمرو بن عاصم

.الكلابي، كلاهما عن عمران القطان، بهذا الإسناد
وأخرجه أحمد (11130)، وأبو يعلى (1128)، وابن حبان (6826) من طريق مطر بن طهمان الوراق، عن أبي الصديق .الناجي، عن أبي سعيد الخدري. وهذا إسناد حسن في المتابعات
قال الراقم عفا الله عنه: أما عمران القطان فقد قال الشيخ عوامة في تعليقه على مصنف ابن أبي شيبة (21 : 81) : (وثقه غير واحد، ومشاه آخرون، وممن وثقه تلميذه عفان ...) وقال الحافظ في التقريب (ص 429) : (صدوق يهم، و رمي برأى الخوارج). وقد حسَّن الترمذي حديثه في الجامع : (3934) وكذا حسَّن الحافظ حديثه في فتح الباري كما في تحفة اللبيب: (1 : 610) وقال الحافظ في التلخيص (335/4 ط. القرطبة) فيه مقال إلا أنه ليس بمتروك، وقد استشهد به البخاري، وصحح له ابن .(حبان والحاكم
وقال أيضا في تهذيب التهذيب : (8 : 131 ط. دائرة المعارف النظامية، الهند، 1326هـ) قال عمرو بن علي: (كان ابن مهدي يحدث عنه وكان يحيى لا يحدث عنه، وقد ذكره يحيى يوما فأحسن الثناء عليه. وقال عبد الله بن أحمد، عن أبيه: أرجوه أن يكون صالح الحديث. وقال الدوري عن ابن معين: ليس بالقوي، وقال مرة: ليس بشيء لم يرو عنه يحيى بن سعيد. وقال الآجري، عن أبي داود: هو من أصحاب الحسن وما سمعت إلا خيرا، وقال مرة: ضعيف أفتي في أيام إبراهيم بن عبد الله بن حسن بفتوى شديدة فيها سفك الدماء، قال: وقدم أبو داود أبا هلال الراسبي عليه تقديما شديدا. وقال النسائي: ضعيف. وقال

ابن عدي: هو ممن يكتب حديثه. وذكره بن حبان في الثقات.
كان حروريا، كان يرى :وقال أبو المنهال، عن يزيد بن زريع
... السيف على أهل القبلة. قلت: في قوله: حروريا نظر
وقال الساجي: صدوق وثقه عفان .... وقال الترمذي: قال
وقال ابن شاهين في الثقات: كان من .البخاري صدوق بهم
أخص الناس بقتادة. وقال الدارقطني: كان كثير المخالفة والوهم.
.(وقال العجلي: بصري ثقة. وقال الحاكم: صدوق
وأما مطر بن طهمان فقد قال عنه الذهبي في السير (10 : 54
الإمام، الزاهد، الصادق، ... حدث عنه: شعبة،) : ط. الرسالة)
.... وغيره أتقن للرواية منه، ولا ينحط حديثه عن رتبة الحسن.
صالح. وقال أحمد بن :وقد احتج به: مسلم. قال يحيى بن معين
حنبل: هو في عطاء ضعيف. وقال النسائي: ليس بالقوي. وكان
يحيى القطان يشبه مطرا بابن أبي ليلى في سوء الحفظ. ....
وقال محمد بن سعد: فيه ضعف في الحديث. (سير أعلام
النبلاء: 59/1)
قلت: فحديث كل منهما يصلح للاحتجاج به عند الانفراد، فكيف
إذا اجتمعا، وقوّى أحدُهما الآخرَ؟

আবু সাইদ খুদরী রাযি. হতে বর্ণিত, রাসুল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, “মাহদী আমার বংশোদ্ভুত হবে, তার কপাল প্রশস্ত ও নাক উঁচু হবে। সে জুলুম-অত্যাচারে ভরা পৃথিবীকে আদল-ইনসাফ দ্বারা পূর্ণ করে দিবে। সে সাত বছর রাজত্ব করবে।” সুনানে আবু দাউদ, ৪২৮৫; ৫/২১৬ মুসনাদে আহমদ, ১১১৩০

হাদিসের মান:- ইমাম ইবনুল জাওযী বলেন, “হাদিসটিতে কোন সমস্যা নেই”। ইবনুল কাইয়িম হাদিসটির সনদকে ‘জাইয়িদ’ বলেছেন, যা সহিহ ও হাসানের মধ্যবর্তী স্তর। শায়েখ শুয়াইব আরনাইত হাদিসটিকে হাসান বলেছেন।

হাকেম রহ. হাদিসটিকে সহিহ বলেন, হাফেয যাহাবী তার উপর আপত্তি করে বলেন, “হাদিসের একজন রাবী ইমরান যয়ীফ,” কিন্তু শায়েখ শুয়াইব আরনাউত যাহাবী রহ. এর মত খন্ডন করে বলেন, “হাদিসটি ইমরানের একক বর্ণণা নয় বরং মুসনাদে আহমদে ‘মাতর বিন তহমানে’র সূত্রেও হাদিসটি বর্ণিত হয়েছে” খোদ ইমাম যাহাবীই বলেছেন, “তার হাদিস হাসান পর্যায়ের, এর চেয়ে নিচের নয়”। ইমাম মুসলিম তার হাদিস সহিহ মুসলিমে এনেছেন। তাছাড়া ইমরানও একেবারে যয়ীফ নন, অনেক ইমাম তাকে নির্ভরযোগ্য বলেছেন। তাই তার হাদিস হাসান পর্যায়ের হবে, বিশেষকরে যদি তা তার একক বর্ণণা না হয়। (দেখুন, সিয়ারু আলামীন নুবালা, ১০/৫৯ তাহযীবুত তাহযীব, হাফেয ইবনে হাযার, ৮/১৩১ সুনানে আবু দাউদের টীকা, শায়েখ শুয়াইব আরনাউত, মুসান্নাফে ইবনে আবী শাইবার টিকা, শায়েখ আওয়ামা, ২১/৮১)

একটি প্রশ্ন:- **এখানে একটি প্রশ্ন হতে পারে যে, ইমাম মাহদীর পরিচয় সংক্রান্ত সহিহ হাদিস তো একেবারেই অল্প। তাহলে এত সামান্য আলামতের ভিত্তিতে আমরা তাকে কিভাবে চিনবো?**

উত্তর:- আল্লাহ তায়ালা ইমাম মাহদীর আবির্ভাবের পূর্বে তাকে চিনার দ্বায়িত্ব আমাদের দেননি। বরং আল্লাহ ও তার রাসুল আমাদের যা আদেশ দিয়েছেন আমরা তা পালন করলেই ইমাম মাহদীকে পেয়ে যাবো এবং তার দলে শরিক হতে পারবো ইনশাআল্লাহ। নিচের হাদিসটি লক্ষ্য করুন,

عن جابر بن عبد الله، قال: سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: «لا تزال طائفة من أمتي يقاتلون على الحق ظاهرين إلى يوم القيامة»، قال: « فينزل عيسى ابن مريم صلى الله عليه وسلم، فيقول أميرهم: تعال صل لنا، فيقول: لا، إن بعضكم على بعض أمراء تكرمة الله هذه الأمة». صحيح مسلم: (156) مسند (1031)صحيح ابن حبان (6819) المنتقى لابن الجارود أحمد : (14720)

"আমার উম্মতের একটি দল কিয়ামত পর্যন্ত সর্বদা হকের উপর প্রতিষ্ঠিত থেকে বাতিলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে থাকবে। পরিশেষে ইসা আলাইহিস সালাম অবতরণ করবেন। তখন ঐ দলের আমীর বলবেন, আসুন, নামাযে আপনি ইমামতি

করুন। ইসা আলাইহিস সালাম উত্তর দিবেন, না, আপনারাই একে অপরের ইমাম, এটা আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে এই উম্মাহর জন্য (বিশেষ) সম্মাননা।" -সহিহ মুসলিম, ৬৮১৯ সহিহ ইবনে জারুদ, ১০৩১ সহিহ ইবনে হিব্বান, ৬৮১৯ মুসনাদে আহমদ, ১৪৭২০

হাদিস থেকে সুস্পষ্টরুপে বুঝে আসে, যারা সর্বদা জিহাদ চালিয়ে যাবে তারাই ইমাম মাহদীর বাহিনী হবে, ইমাম মাহদী তাদের আমির হবেন। আর এখন যারা জিহাদী দলগুলোকে বাতিল মনে করে জিহাদ থেকে বিরত থাকছে, আল্লাহ-রাসুলের আদেশ অমান্য করে ঘরে বসে ইমাম মাহদীর আগমণের প্রতীক্ষা করছে, বস্তুত তারা ইমাম মাহদী আসলেও তার ব্যাপারে সংশয় পোষণ করবে। তাদের সবচেয়ে বড় সংশয় তো এটাই হবে যে, ইমাম মাহদী কিভাবে আলকায়েদা-তালেবানের মত ভ্রান্ত দলের আমীর হতে পারেন?!

এখন যেমন কাফের ও তাদের দোসর মুরতাদ সরকাররা জিহাদে প্রতিবন্ধকতা তৈরী করছে, শরিয়তের সমস্ত দলিল উপেক্ষা করে দরবারী আলেমরা জিহাদ বিরোধী ফতোয়া দিচ্ছে, তখনও যে পরিস্থিতি এরচেয়ে ভিন্ন হবে এমন ভাবার কোন কারণ নেই।

তাছাড়া তারা যে ভাবছে, **মাহদীর আগমণ ঘটলেই তারা মুহুর্তে দুনিয়ার সমস্ত ঝই-ঝামেলা পেছনে ফেলে মাহদীর সাহাযার্থ্যে ছুটে যাবে, এটা অলীক কল্পনা বৈ কিছুই নয়। জিহাদ কোন চাট্টিখানি বিষয় নয়। জিহাদের জন্য মানসিক-শারিরীক-বস্তুগত সব ধরণের পূর্বপ্রস্তুতির প্রয়োজন রয়েছে। যারা জিহাদের আকাংক্ষা পোষণ করার দাবী করে কিন্তু এর জন্য কোন প্রস্তুতি গ্রহণ করে না কুরআনের সাক্ষ্য অনুযায়ী তারা মিথ্যাবাদী।** আল্লাহ তায়ালা বলেন,

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً (سورة التوبة : 46)

‘যদি যুদ্ধে যাবার ইচ্ছাই তাদের থাকতো তবে এর জন্য কিছু না কিছু প্রস্তুতি অবশ্যই গ্রহণ করতো’। -সুরা তাওবাহ, ৪৬

আয়াতের তাফসীরে ইমাম কুরতুবী রহিমাহুল্লাহু বলেন,

قوله تعالى : {وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً} أي لو أرادوا الجهاد لتأهبوا أهبة السفر. فتركهم الاستعداد دليل على إرادتهم التخلف. (تفسير القرطبي 156/8 ط دار عالم الكتب)

‘অর্থাৎ যদি তারা যুদ্ধ করতে চাইতো তাহলে সফরের প্রস্তুতি গ্রহণ করতো। সুতরাং তাদের প্রস্তুতি গ্রহণ না করা, যুদ্ধে অংশগ্রহণ করার ইচ্ছা না থাকার দলিল’।

ইমাম জাসসাস রহিমাহুল্লাহু বলেন,

قال الله تعالى: {ولو أرادوا الخروج لأعدوا له عدة} فذمهم على ترك الاستعداد والتقدم قبل لقاء العدو.اهـ

‘আল্লাহ তায়ালা বলেন, যদি তারা যুদ্ধে বের হওয়ার ইচ্ছা করতো, তবে এর জন্য প্রস্তুতিগ্রহণ করতো।” যুদ্ধের সময় আসার পূর্বেই প্রস্তুতি গ্রহণ না করার কারণে আল্লাহ তাআলা তাদেরকে তিরস্কার করেছেন’। -আহকামুল কুরআন: ৩/৮৯

আল্লামা সা’দী রহিমাহুল্লাহু (মৃত্যু: ১৩৭৬ হি.) বলেন,

يقول تعالى مبينا أن المتخلفين من المنافقين قد ظهر منهم من القرائن ما يبين أنهم ما قصدوا الخروج للجهاد بالكلية، وأن أعذارهم التي اعتذروها باطلة، فإن العذر هو المانع الذي يمنع إذا بذل العبد وسعه، وسعى في أسباب الخروج، ثم منعه مانع شرعي، فهذا الذي يعذر.

و} أما هؤلاء المنافقون فـ {لَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لأعَدُّوا لَهُ عُدَّةً} { أي: لاستعدوا وعملوا ما يمكنهم من الأسباب، ولكن لما لم يعدوا له عدة، علم أنهم ما أرادوا الخروج. (تفسير السعدي: 339 ط. مؤسسة الرسالة)

আল্লাহ তায়ালা (এ আয়াতে) বলছেন, (তাবুক) যুদ্ধে যে মুনাফিকরা অংশগ্রহণ করেনি, তাদের থেকে এমন কিছু

আলামত প্রকাশ পেয়েছে, যা দ্বারা বোঝা যায় তাদের জিহাদে যাওয়ার কোন ইচ্ছাই ছিল না এবং যেসব বাহানা তারা পেশ করেছে সেগুলো একেবারেই অবান্তর। কেননা প্রকৃত উযর হলো ঐ প্রতিবন্ধকতা যা বান্দা তার সাধ্যের সবটুকু করার পর এবং যুদ্ধে যাওয়ার আসবাব-মাধ্যম অর্জনের চেষ্টা করার পর দেখা দেয়, সুতরাং এমন উযর যার রয়েছে তাকে ক্ষমা করা যায়। পক্ষান্তরে এই মুনাফিকরা যদি যুদ্ধে যাওয়ার ইচ্ছা রাখতো তাহলে তারা প্রস্তুতি গ্রহণ করতো এবং যেসব আসবাব গ্রহণ করা তাদের জন্য সম্ভব ছিলো সেগুলো গ্রহণ করতো। কিন্তু যেহেতু তারা যুদ্ধের জন্য কোন প্রস্তুতিই গ্রহণ করেনি তো বোঝা গেলো তাদের যুদ্ধে যাওয়ার ইচ্ছা একদমই ছিলো না। -তাফসীরে সা’দী: পৃ: ৩৩৯

আল্লামা শাওকানী রহিমাহুল্লাহু বলেন,

ولو أرادوا الخروج لأعدوا له عدة أي: لو كانوا صادقين فيما يدعونه- ويخبرونك به- من أنهم يريدون الجهاد معك، ولكن لم يكن معهم من العدة للجهاد ما يحتاج إليه، لما تركوا إعداد العدة، وتحصيلها قبل وقت الجهاد كما يستعد لذلك المؤمنون، فمعنى هذا الكلام: أنهم لم يريدوا الخروج أصلا، وإلا استعدوا للغزو. (فتح القدير: 522/2 ط. دار الوفاء)

“যদি তারা যুদ্ধে যাওয়ার ইচ্ছা করতো তবে যুদ্ধের জন্য

প্রস্তুতি গ্রহণ করতো। অর্থাৎ তারা যে দাবী করে যে, আপনার সাথে যুদ্ধে যাওয়ার ইচ্ছা তাদের ছিল, কিন্তু তাদের নিকট যুদ্ধে যাওয়ার প্রয়োজনীয় আসবাব ছিল না,- যদি তারা তাদের এই দাবীতে সত্যবাদী হতো তাহলে যুদ্ধের সময় আসার পূর্বেই যুদ্ধের জন্য প্রস্তুতি গ্রহণ করতো, যেমনিভাবে মুমিনরা যুদ্ধের জন্য প্রস্তুতি গ্রহণ করে। সুতরাং এ বাক্যের অর্থ হলো, তাদের যুদ্ধে যাওয়ার কোন ইচ্ছাই ছিলো না। নতুবা তারা প্রস্তুতিগ্রহণ করতো। -ফাতহুল কাদীর, ২/৫২২

সুনানে নাসায়ীর হাদিসে এসেছে, মানুষ যখন জিহাদে যাওয়ার ইচ্ছা করে তখন শয়তান তাকে নানা কুমন্ত্রণা দিতে থাকে। শয়তান বলে, তুমি জিহাদে যাবে? এতে তোমার কত কষ্ট হবে, তোমার ধনসম্পদ ক্ষতিগ্রস্থ হবে। তুমি যুদ্ধে নিহত হবে তখন তোমার (প্রাণপ্রিয়) স্ত্রীকে অন্য কেউ বিয়ে করবে, তোমার (কষ্টার্জিত) ধনসম্পদ অন্যরা ভাগাভাগি করে নিয়ে যাবে। -সুনানে নাসায়ী, ৩১৩৪

আল্লাহ তায়ালা আমাদেরকে জিহাদের পথে অবিচল রাখুন, রাসুল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম এ হাদিসের উপর আমল করার তাওফিক দান করুন,

فإذا لقيتموهم فاصبروا، واعلموا أن الجنة تحت ظلال السيوف

“কাফেরদের সাথে তোমাদের মোকাবেলা হলে অবিচল থেকে (যুদ্ধ করো)। আর জেনে রাখো, জান্নাত তো তরবারীর ছায়াতলেই।” -সহিহ বুখারী, ২৯৬৬ সহিহ মুসলিম, ১৭৪২

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

আজ এখানেই শেষ করছি, আগামীতে ইনশাআল্লাহ সহিহ হাদিসের আলোকে ইমাম মাহদীর রাজত্বকাল এবং তার রাজত্বকালে মুসলমানদের বিজয়, সমৃদ্ধি ও প্রাচূর্য এবং অন্যান্য বিবরণ তুলে ধরবো ইনশাআল্লাহ।

২৮.ইমাম মাহদীর ব্যাপারে প্রচলিত যয়ীফ ও মওযু হাদিস

ইমাম মাহদীর পরিচয় সম্পর্কে ইতিপূর্বে সহিহ হাদিসের আলোকে বিস্তারিত আলোচনা করেছি। ইমাম মাহদীর পরিচয়ের ব্যাপারে সহিহ হাদিসের পাশাপাশি অনেক যয়ীফ ও মওযু হাদিস রয়েছে, সেগুলো আমাদের জানার তেমন প্রয়োজন ছিল না। কিন্তু কাযী ইবরাহীম সাহেব ইউটিউবে সেগুলো নিয়ে অনেক আলোচনা করছেন। তিনি মুহাদ্দিস-

আলেম হওয়ার কারণে মানুষ তার উপর আস্থা রেখে সেগুলো বিশ্বাসও করছে। অথচ সে হাদিসগুলো শুধু যয়ীফই নয়। বরং তার কিছু কিছু মওযু ও জাল। কাযী ইবরাহীম সাহেবকে আমরা অন্যান্য আহলে হাদিসের তুলনায় ভালো মনে করি। তিনি রফয়ে ইদাইনের মত মুস্তাহাব বিষয়াদী নিয়ে মুসলমানদের মাঝে বিভেদ সৃষ্টি করেন না। তাছাড়া কেউই যখন ফিতানের ব্যাপারে তেমন চর্চা করছে না তখন তার চর্চাও প্রশংসনীয়। কিন্তু তিনি যদি হাদিসগুলো একটু যাচাই করে বলতেন তাহলে আর আমাদের এ কষ্ট করার প্রয়োজন হতো না। যাই হোক এখন যেহেতু তিনি এ ধরণের যয়ীফ ও মওযু হাদিসগুলো ব্যাপকভাবে ছড়িয়ে দিয়েছেন তাই এগুলো সম্পর্কে আলোচনা করা জরুরী হয়ে পড়েছে। নতুবা যখন ইমাম মাহদী আসবে এবং তার সাথে যয়ীফ ও মওযু হাদিসে বর্ণিত আলামতগুলো মিলবে না তখন হয়তো আমরা অনেকেই বিভ্রান্তির শিকার হবো। তাই ধারাবাহিকভাবে এ ধরণের হাদিসগুলো নিয়ে আলোচনা করবো ইনশাআল্লাহ।

ইমাম মাহদীর আবির্ভাবস্থল

حدثنا محمد بن تمام بن صالح الحمصي، بحمص، حدثنا عبد الوهاب بن الضحاك، حدثنا إسماعيل بن عياش، عن صفوان بن عمرو، عن عبد الرحمن بن جبير بن نفير، عن كثير بن مرة،

عن عبد الله بن عمرو بن العاص قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "يخرج المهدي من قرية باليمين يقال لها: كرعة، وعلى رأسه عمامة فيها مناد ينادي: ألا إن هذا المهدي فاتبعوه". (معجم ابن المقرئ، رقم: 90)
وعبد الوهاب بن الضحاك متهم، قال الذهبي في ميزان الاعتدال: (2/679 دار المعرفة للطباعة والنشر، بيروت – لبنان الطبعة: الأولى، 1382 هـ) :
كذبه أبو حاتم. وقال النسائي وغيره: متروك .وقال الدارقطني: (وقال البخاري: عنده عجائب). وذكر له الذهبي .منكر الحديث هذا الحديث من أوابده.

আব্দুল্লাহ বিন আমর বিন আস রাযি. হতে বর্ণিত, রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, মাহদী ইয়ামানের 'কারআ' নামক গ্রাম হতে বের হবেন। তার মাথায় একটি পাগড়ী থাকবে, যে পাগড়ীতে একজন ফেরেশতা থাকবেন, তিনি ঘোষণা করতে থাকবেন, শোন! এই হলো মাহদী, তোমরা তার অনুসরণ করো। (মু'জামু ইবনুল মুকরী, ৯০
কাযী ইবরাহীম সাহেবের বয়ানের লিংক:- https://www.youtube.com/watch?v=IHMrGZZlcFA এর ২ : ৩৪ মিনিট)

হাদিসের মান:- হাদিসটা নিতান্তই দূর্বল, বরং মওযু, হাদিসের একজন রাবী আব্দুল ওয়াহহাব বিন যাহহাক

সম্পর্কে ইমাম আবু দাউদ বলেন, সে জাল হাদিস বানায়। ইমাম আবু হাতেম রাযী তাকে মিথ্যাবাদী বলেছেন। নাসায়ী মাতরুক বা পরিত্যাজ্য বলেছেন, দারাকুতনী 'মুনকারুল হাদিস' বলেছেন। ইমাম বুখারী বলেন, সে বহু আশ্চর্যজনক হাদিস বর্ণনা করেছে। হাফেয যাহাবী বলেন, এই হাদিসটা তার বিরল হাদিসসমূহের একটা। (দেখুন, মিযানুল ইতিদাল, ২/৬৭৯ যখিরাতুল হুফফায, ৫/২৭৮১ দারুস সালাফ, রিয়ায, প্রথম প্রকাশনা, ১৪১৬ আলমওসুয়্যাহ ফি আহাদিসিল মাহদী আযযয়ীফাহ ওয়াল মওযুয়্যাহ, ডক্টর আব্দুল আলীম বস্তাভী, পৃ: ৩৭৬ দারু ইবনি হাযম, বৈরুত, লেবানন, প্রথম প্রকাশনা, ১৪২০ হি.)

ইমাম মাহদী ২০২১ সালে আসবেন

حدثنا الوليد بن مسلم، عن صدقة بن خالد، عن عبد الرحمن بن حميد، عن مجاهد، عن تبيع، قال: «سيعوذ بمكة عائذ فيقتل، ثم يمكث الناس برهة من دهرهم، ثم يعوذ عائذ آخر، فإن أدركته فلا تغزونه، فإنه جيش الخسف». رواه نعيم بن الحماد (935)

তুবাঈ রহ. বলেন, অচিরেই মক্কায় একব্যক্তি আশ্রয়গ্রহণ করে নিহত হবে। অতপর মানুষ কিছুকাল অবস্থান করবে। এরপর আরেকব্যক্তি আশ্রয়গ্রহণ করবে। যদি তুমি তাকে

পাও তবে তার বিপক্ষে যুদ্ধ করো না। কেননা তার বিপক্ষের বাহিনীকেই যমিনে ধ্বসিয়ে দেওয়া হবে। - আলফিতান, নুয়াইম বিন হাম্মাদ, ৯৩৫ (https://www.youtube.com/watch?v=dn3-gMOuSMg এর 9 : 25 মিনিট)

হাদিসের মান:- এটা কোন হাদিস নয়। বরং তুবাঈ বিন আমের রহ. এর বক্তব্য যিনি একজন তাবেয়ী। তিনি ইহুদী আলেম কাবে' আহবারের সৎপুত্র, তাঁর কাছে ইলম শিখেন, তাওরাত-ইঞ্জীল ইত্যাদি আসমানী কিতাব পড়েন। তাই তার বাণীকে হাদিসরুপে বিশ্বাস করার সুযোগ নেই। কেননা হতে পারে তিনি এ বিষয়গুলো কাবে আহবারের কাছে শিখিছেন কিংবা পূর্ববর্তী আসমানী কিতাবাদীতে পেয়েছেন। সুতরাং এগুলো ইসরাঈলী বর্ণনার অন্তর্ভুক্ত, যার ব্যাপারে হাদিসের নির্দেশনা হলো,

« لا تصدقوا أهل الكتاب ولا تكذبوهم» وقولوا: [آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إليكم]. (صحيح البخاري: 7362)

"তোমরা আহলে কিতাবদের বর্ণিত বিষয়াদী সত্যায়ন না করা এবং মিথ্যা প্রতিপন্নও করো না। বরং তোমরা বলো, 'আমরা আল্লাহর প্রতি ইমান এনেছি এবং সেই বাণীর

প্রতিও যা আমাদের উপর নাযিল করা হয়েছে এবং তার প্রতিও যা তোমাদের উপর নাযিল করা হয়েছে।” -সহিহ বুখারী, ৭৩৬২ আততাবাকাতুল কুবরা, ইবনে সাদ, ৭/৩১৪ সিয়ারু আলামীন নুবালা, ৭/৪৬৬

উল্লেখ্য, হাদিস শাস্ত্রের মূলনীতি অনুযায়ী, কোন সাহাবী বা তাবেয়ী ভবিষ্যতের বিষয়াদী বর্ণনা করলে, সেটা তারা কোন না কোন ভাবে রাসূলের তরফ থেকেই জেনেছেন বলে ধরা হয়। কিন্তু এক্ষেত্রে শর্ত হলো, যেই সাহাবী বা তাবেয়ী তা বর্ণনা করছেন, তিনি ইসরাঈলী রেওয়ায়েত বর্ণনাকারী না হতে হবে। আর তুবাঈ রহ. যেহেতু ইসরাঈলী রেওয়ায়েত বর্ণনায় প্রসিদ্ধ তাই তিনি ভবিষ্যতের কোন বিষয়াদী বর্ণনা করলেও সেটা রাসুলের মাধ্যমে না জেনে ইসরাঈলী রেওয়ায়েত থেকে জেনেছেন বলেই বিবেচিত হবে। -দেখুন, নুযহাতুন নযর, হাফেয ইবনে হাযার, পৃ: ১১০৬/ মাতবাআতুল মিসবাহ, দিমাশক, তৃতীয় প্রকাশনা, ১৪২১ হি.; ফাতহুল মুগিস, হাফেয সাখাভী, ১/১৬৪ মাকতাবাতুস সুন্নাহ, প্রথম প্রকাশনা, ১৪২৪ হি.

চলবে ইনশাআল্লাহ

২৯.সহিহ হাদিসের আলোকে ইমাম মাহদীর আমলে মুসলমানদের বিজয়, প্রাচুর্য ও সমৃদ্ধি

ইমাম মাহদীর রাজত্বকাল

سليمان بن عبيد، ثنا أبو الصديق الناجي، عن أبي سعيد الخدري رضي الله عنه، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم، قال:
« يخرج في آخر أمتي المهدي يسقيه الله الغيث، وتخرج الأرض نباتها، ويعطي المال صحاحا، وتكثر الماشية وتعظم الأمة، يعيش سبعا أو ثمانيا يعني حججا». رواه الحاكم (8673) وقال الشيخ شعيب الأرنؤوط في تعليقه على مسند أحمد(17/255 ط. الرسالة) : (قال الحاكم: هذا حديث صحيح الإسناد، ولم يخرجاه، وقال الذهبي: صحيح. قلنا: رجاله جميعهم ثقات، وسليمان بن عبيد: وهو السلمي البصري، وثقه ابن معين، وقال أبو حاتم صدوق، وذكره ابن حبان في الثقات). وقال الألباني في سلسة الأحاديث الصحيحة (رقم: 711) : (هذا سند صحيح رجاله ثقات). وقال الدكتور عبد العليم البستوي في (المهدي المنتظر (ص165 ط. دار ابن حزم) : (إسناده صحيح).

আবু সাইদ খুদরী রাযি. হতে বর্ণিত, রাসুল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, "আমার উম্মতের শেষভাগে মাহদীর আগমন ঘটবে। তার যমানায় প্রচুর বৃষ্টিপাত হবে।

যমিনে সর্বোচ্চ মাত্রায় ফলন হবে। তিনি (মানুষকে) সমানভাবে সম্পদ প্রদান করবেন। (তার শাসনামলে) গবাদি পশুর সংখ্যা বেড়ে যাবে হবে। উম্মাহর বংশবৃদ্ধি ঘটবে। তিনি সাত বা আট বছর রাজত্ব করবেন।” -মুস্তাদরাকে হাকেম, ৮৬৭৩

হাদিসের মান:- হাফেয আবু আব্দুল্লাহ হাকেম, হাফেয যাহাবী, শায়েখ শুয়াইব আরনাউত, শায়েখ আলবানী ও ডক্টর আব্দুল আলীম হাদিসটিকে সহিহ বলেছেন। -মুসনাদে আহমদের টীকা, শায়েখ শুয়াইব আরনাউত, ১৭/২৫৫ সিলসিলাতুল আহাদিসিস সহিহাহ, ৭১১ আলমাহদিউল মুন্তাযার, পৃ: ১৬৫

عن أبي سعيد الخدري، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: «أبشركم بالمهدي يبعث في أمتي على اختلاف من الناس وزلازل، فيملأ الأرض قسطا وعدلا، كما ملئت جورا وظلما، يرضى عنه ساكن السماء وساكن الأرض، يقسم المال صحاحا» فقال له رجل: ما صحاحا؟ قال: «بالسوية بين الناس» قال: «ويملأ الله قلوب أمة محمد صلى الله عليه وسلم غنى، ويسعهم عدله، حتى يأمر مناديا فينادي فيقول: من له في مال حاجة؟ فما يقوم من الناس إلا رجل فيقول أنا، فيقول: ائت السدان - يعني الخازن - فقل له: إن المهدي يأمرك أن تعطيني مالا، فيقول له: احث حتى إذا جعله في حجره وأبرزه ندم، فيقول: كنت أجشع أمة محمد نفسا، أو عجز عني ما وسعهم؟ قال فيرده فلا يقبل

منه، فيقال له: إنا لا نأخذ شيئا أعطيناه، فيكون كذلك سبع سنين - أو ثمان سنين، أو تسع سنين». رواه أحمد: (11326) وقال الحافظ الهيثمي في مجمع الزوائد (رقم: 12393) : (رواه أحمد بأسانيد وأبو يعلى باختصار كثير، ورجالهما ثقات). وقال الشيخ الألباني في سلسلة الأحاديث الصحيحة (رقم: 4001) : (رجاله ثقات رجال مسلم، غير العلاء بن بشير، وهو مجهول، كما في «التقريب». لكن قد توبع على بعضه عند الحاكم).

قال الراقم عفا الله عنه: العلاء بن بشير قد وثَّقه ابن حبان، وقد حقَّق الشيخ عوامة : أن توثيق ابن حبان معتبر مثل توثيق غيره من الأئمة، وأن ما اشتهر عنه أنه يوثق المجاهيلَ غير صحيح، بل منهجه في ذلك منهج غيره من المحدثين المتقدمين مثل يحيى بن معين وأبي حاتم الرازي وأبي داود وابن عدي وغيرهم، وهو أنهم يسبرون أحاديث الراوي، ثم يُوثِّقونه إذا لم يجدوا في أحاديثه ما يُستنكر. (راجع: تعليق الشيخ عوامة على «المصنف» لابن أبي شيبة: 1/77 - 101 ط. دار القبلة) فالحديث لا ينزل عن درجة الحسن إن شاء الله لا سيما عند وجود المتابع والشاهد

.

আবু সাইদ খুদরী রাযি. হতে বর্ণিত, রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, “আমি তোমাদের মাহদীর সুসংবাদ দিচ্ছি। মুসলমানদের মাঝে অনৈক্য ও অস্থিরতার সময়ে আল্লাহ তায়ালা তাকে প্রেরণ করবেন। সে জুলুম-অত্যাচারে ভরা দুনিয়াকে আদল-ইনসাফ দ্বারা পূর্ণ করে

দিবে। আসমান ও যমিনের অধিবাসী সকলেই তার প্রতি সন্তুষ্ট থাকবে। সে সমভাবে সম্পদ বিলি করবে। (তার সময়কালে) আল্লাহ তায়ালা উম্মতে মুহাম্মদীর অন্তর প্রাচুর্যতায় পূর্ণ করে দিবেন। তার আদল-ইনসাফ সকলের ক্ষেত্রে ব্যাপৃত হবে। এমনকি ঘোষক ঘোষণা করবে, কারো সম্পদের প্রয়োজন আছে কি? তখন একব্যক্তি ব্যতীত কেউ উঠে দাঁড়াবে না। সে বলবে, আমার প্রয়োজন রয়েছে। ঘোষক বলবে, তুমি কোষাধ্যক্ষের কাছে গিয়ে বলো, আমাকে সম্পদ প্রদান করার জন্য মাহদী তোমাকে নির্দেশ দিয়েছে। কোষাধ্যক্ষ বলবে, তুমি হাত ভরে নাও। যখন সে কোষ ভরে সম্পদ নিয়ে তা কোলে রাখবে তখন সে অনুতপ্ত হয়ে বলবে, আমি তো উম্মতে মুহাম্মদীর মধ্যে সবচেয়ে লোভী। তারা যা করলো আমি কেন তা করতে পারলাম না। তখন সে সেই সম্পদ ফিরিয়ে দিতে চাইবে। কিন্তু তা গ্রহণ করা হবে না। বলা হবে, আমরা সম্পদ প্রদান করার পর তা ফেরত নেই না। এমনিভাবে সাত, আট বা নয় বছর অতিবাহিত হবে।" -মুসনাদে আহমদ, ১১৩২৬

হাদিসের মান:- হাফেয নুরুদ্দীন হাইসামী রহ. বলেছেন, হাদিসের বর্ণনাকারীগণ সকলেই নির্ভরযোগ্য। -মাজমাউয যাওয়ায়েদ, ১২৩৯৩

عن أبي سعيد، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: «من خلفائكم خليفة يحثو المال حثيا، لا يعده عددا». صحيح مسلم (2914)

তোমাদের খলীফাদের মধ্যে একজন খলীফা এমন হবে, যে হাত ভরে ভরে দান করবে এবং মালের কোন গণনাই করবে না। -সহিহ মুসলিম, ২৯১৪ (৬/৩৯৫ ইফা.)

قال رسول الله صلى :عن أبي سعيد، وجابر بن عبد الله، قالا الله عليه وسلم: «يكون في آخر الزمان خليفة يقسم المال ولا يعده». صحيح مسلم (2914)

শেষ যমানায় একজন খলীফা হবে। সে হাত ভরে ভরে সম্পদ বিলি করবে। গণনা করবে না। -সহিহ মুসলিম, ২৯১৪ (৬/৩৯৫ ইফা.)

عن زيد العمي، عن أبي صديق الناجي عن أبي سعيد الخدري، أن النبي صلى الله عليه وسلم قال: «يكون في أمتي المهدي، إن قصر فسبع وإلا فتسع، فتنعم فيه أمتي نعمة لم ينعموا مثلها قط، تؤتى أكلها، ولا تدخر منهم شيئا، والمال يومئذ كدوس، فيقوم الرجل فيقول: يا مهدي أعطني، فيقول: خذ».

رواه ابن ماجه (4083) وأحمد (11163) والترمذي مختصرا

(2232) وقال : (هذا حديث حسن، وقد روي من غير وجه عن أبي سعيد عن النبي صلى الله عليه وسلم)

قال الجامع عفا الله عنه: وفي إسناده زيد العمي، وهو ضعيف، ولكن يشهد له ما أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط (5406) عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: «يكون في أمتي المهدي، إن قصر فسبع وإلا فثمان وإلا فتسع، تنعم أمتي فيها نعمة لم ينعموا مثلها، يرسل السماء عليهم مدرارا، ولا تدخر الأرض شيئا من النبات، والمال كدوس، يقوم الرجل يقول: يا مهدي، أعطني، فيقول: خذ». قال الهيثمي في مجمع الزوائد (رقم: 12411) : (رجاله ثقات).

وقال الشيخ شعيب في تعليقه على سنن أبي داود: (6 : 343 ط. دار الرسالة العالمية) : (زيد العمي ضعيف لكنه متابع) ثم ذكر حديث أبي سعيد المار آنفا عند الحاكم، ثم قال : (6 : 344) (ويشهد للفظ زيد العمي تماما حديث أبي هريرة عند البزار (3326 - كشف الأستار)، والطبراني في الأوسط (5406)، وابن الجوزي في العلل المتناهية (1444) وإسناده حسن).

আবু সাইদ খুদরী রাযি. হতে বর্ণিত, রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, "আমার উম্মাহর মাঝেই মাহদীর আগমন ঘটবে। তিনি কমপক্ষে সাতবছর, অন্যথায় নয় বছর রাজত্ব করবেন। তার আমলে আমার উম্মত এমন সুখ-স্বচ্ছন্দে বসবাস করবে যে সুখ তারা ইতিপূর্বে কখনো ভোগ করেনি। (ভূ-পৃষ্ঠের হাল এই হবে যে) তা সব ধরনের

ফলমূল উৎপন্ন করবে। কিছুই আটকে রাখবে না। ধন-সম্পদ স্তুপকৃত করা থাকবে। লোকে দাঁড়িয়ে বলবে, হে মাহদী! আমাকে দিন। মাহদী বলবেন, (যত ইচ্ছা) নিয়ে যাও।” -সুনানে ইবনে মাজাহ, ৪০৮৩ (৩/৫৪১ ইফা.) মুসনাদে আহমদ, ১১১৬৩ জামে’ তিরমিযি, ২২৩২

হাদিসের মান:- এই হাদিসটির একজন রাবী ‘যায়েদ আলআ’মা’ যয়ীফ, তবে মু’জামে তবরানী ও অন্যান্য গ্রন্থে আবু হুরাইরা রাযি. এর সূত্রে বর্ণিত একই অর্থবহ আরেকটি হাদিস রয়েছে। হাফেয নুরুদ্দীন হাইসামী ও শায়েখ শুয়াইব আরনাউত সেই হাদিসটির সনদকে নির্ভরযোগ্য বলেছেন। তাই সেই হাদিসের সাথে মিলে আমাদের আলোচ্য হাদিসটি হাসান পর্যায়ে উন্নীত হয়। সম্ভবত এ কারণেই ইমাম তিরমিযি রহ. হাদিসটিকে হাসান বলেছেন। -দেখুন, জামে তিরমিযি, ২২৩২ মাজমাউয যাওয়ায়েদ, হাফেয হাইসামী, ১২৪১১ সুনানে আবু দাউদের টীকা, শায়েখ শুয়াইব আরনাউত, ৬/৩৪৩

ইমাম মাহদীর নেতৃত্বে মুসলমানদের তৃতীয় বিশ্বযুদ্ধে বিজয়

عن حسان بن عطية، قال: مال مكحول وابن أبي زكريا إلى خالد بن معدان، وملت معهم، فحدثنا عن جبير بن نفير عن

الهدنة قال:قال جبير: انطلق بنا إلى ذي مخبر -أو قال: ذي
مخمر، الشك من أبي داود- رجل من أصحاب النبي - صلى
الله عليه وسلم -، فأتيناه، فسأله جبير عن الهدنة، فقال: سمعت
رسول الله - صلى الله عليه وسلم - يقول: "ستصالحون الروم
صلحا آمنا، فتغزون أنتم وهم عدوا من ورائكم، فتنصرون
وتغنمون وتسلمون، ثم ترجعون حتى تنزلوا بمرج ذي تلول،
فيرفع رجل من أهل النصرانية الصليب فيقول: غلب الصليب،
فيغضب رجل من المسلمين فيدقه، فعند ذلك تغدر الروم وتجمع
للملحمة (رواه أبو داود، 4292) وقال الشيخ شعيب في تلعيقه
على سنن أبي داود : (6 : 351) : (إسناده صحيح) وزاد في
رواية أحمد: (16826) : (فيأتونكم في ثمانين غاية، مع كل
غاية عشرة) وقال الشيخ شعيب في تعليقه على مسند أحمد:
(حديث صحيح).

وفي حديث طويل عن عوف بن مالك الأشجعي عند البخاري
(3176) : (ثم تكون بينكم وبين بني الأصفر هدنة، فيغدرون
بكم، فيسيرون إليكم في ثمانين غاية، تحت كل غاية اثنا عشر
ألفا).

হাসসান বিন আতিয়্যাহ রহ. বলেন, মাকহুল ও ইবনে আবু যাকারিয়া খালিদ বিন মা'দানের নিকট যান। আমিও তাদের সাথী হই। খালেদ আমাদেরকে জুবায়ের বিন নুফায়েরের সূত্রে সন্ধির ব্যাপারে হাদিস বর্ণনা করেন। (খালেদ বলেন) জুবায়ের (আমাকে উদ্দেশ্য করে) বলেন, তুমি আমাদেরকে

নবীজির সাহাবী যু-মিখমারের কাছে নিয়ে চলো। তখন আমরা তার নিকট উপস্থিত হই এবং জুবায়ের তার নিকট সন্ধির ব্যাপারে জিজ্ঞাসা করেন। তখন তিনি বলেন, আমি রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামকে এরূপ বলতে শুনেছি, অচিরেই তোমরা রোমকদের সাথে শান্তিপূর্ণ সন্ধি করবে এবং তোমরা ও তারা সম্মিলিত হয়ে অপর এক শত্রুর বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে। তোমরা সে যুদ্ধে বিজয়ী হবে, গণীমত লাভ করবে এবং নিরাপদে ফিরে এসে একটি টিলাবিশিষ্ট সবুজ-শ্যামল প্রসস্থ ভূমিতে অবতরণ করবে। তখন এক খৃষ্টান ক্রুশ উত্তোলন করে বলবে, ক্রুশ বিজয়ী হয়েছে! এতে এক মুসলিম ক্ষীপ্ত হয়ে ক্রুশ ভেঙ্গে ফেলবে। তখন খৃষ্টানরা গাদ্দারী করবে এবং বিশ্বযুদ্ধের জন্য প্রস্তুতি নিবে। -সুনানে আবু দাউদ, ৪২৯২

সহিহ বুখারীতে আওফ বিন মালেক রাযি. এর সূত্রে বর্ণিত এক দীর্ঘ হাদিসে এসেছে, “অতপর তোমাদের মাঝে এবং রোমান (খৃষ্টানদের) মাঝে যুদ্ধ বিরতির চুক্তি সম্পাদিত হবে। কিন্তু তারা বিশ্বাসঘাতকতা করবে এবং আশিটি পতাকা উত্তোলন করে তোমাদের মোকাবিলায় আসবে, প্রত্যেক পতাকাতলে বার হাজার সৈন্য থাকবে।” -সহিহ বুখারী, ৩১৭৬

নোট:- এ হাদিসদ্বয়ে তৃতীয় বিশ্বযুদ্ধের প্রেক্ষাপট ও তাতে কাফেরদের সৈন্যবাহিনীর সংখ্যা বর্ণনা করা হয়েছে, (১২০০০ ৮০ = ৯৬০০০০ নয় লাখ ষাট হাজার অর্থাৎ প্রায় এক মিলিয়ন) তবে এ যুদ্ধে কারা বিজয়ী হবে সে ব্যাপারে কিছু বলা হয়নি। তবে আমরা সবাই জানি, সে যুদ্ধে বিজয় মুসলমানদেরই পদচুম্বন করবে। পরবর্তী হাদিসে বিষয়টি সুস্পষ্টরূপে বর্ণিত হয়েছে।

عن أُسَير بن جابر، قال: هاجت ريح حمراء بالكوفة، فجاء رجل ليس له هجيرى إلا: يا عبد الله بن مسعود جاءت الساعة، قال: فقعد وكان متكئا، فقال: إن الساعة لا تقوم، حتى لا يقسم ميراث، ولا يفرح بغنيمة، ثم قال: بيده هكذا - ونحاها نحو الشأم - فقال: عدو يجمعون لأهل الإسلام، ويجمع لهم أهل الإسلام، قلت: الروم تعني؟ قال: نعم، وتكون عند ذاكم القتال ردة شديدة، فيشترط المسلمون شرطة للموت لا ترجع إلا غالبة، فيقتتلون حتى يحجز بينهم الليل، فيفيء هؤلاء وهؤلاء، كل غير غالب، وتفنى الشرطة، ثم يشترط المسلمون شرطة للموت، لا ترجع إلا غالبة، فيقتتلون حتى يحجز بينهم الليل، فيفيء هؤلاء وهؤلاء، كل غير غالب، وتفنى الشرطة، ثم يشترط المسلمون شرطة للموت، لا ترجع إلا غالبة، فيقتتلون حتى يمسوا، فيفيء هؤلاء وهؤلاء، كل غير غالب، وتفنى الشرطة، فإذا كان يوم الرابع، نهد إليهم بقية أهل الإسلام، فيجعل الله الدبرة عليهم، فيقتلون مقتلة - إما قال لا يرى مثلها، وإما قال لم ير مثلها - حتى إن الطائر ليمر بجنباتهم، فما يخلفهم حتى يخر ميتا، فيتعاد بنو الأب، كانوا مائة، فلا يجدونه بقي منهم إلا الرجل الواحد، فبأي غنيمة يفرح؟ أو أي ميراث يقاسم، فبينما هم كذلك إذ

سمعوا ببأس، هو أكبر من ذلك، فجاءهم الصريخ، إن الدجال قد خلفهم في ذراريهم، فيرفضون ما في أيديهم، ويقبلون، فيبعثون عشرة فوارس طليعة، قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: «إني لأعرف أسماءهم وأسماء آبائهم، وألوان خيولهم، هم خير فوارس على ظهر الأرض يومئذ - أو من خير فوارس على ظهر الأرض يومئذ -». صحيح مسلم :(2899)

উসায়র বিন জাবের রাযি. হতে বর্ণিত, তিনি বলেন, একবার কুফা নগরীতে লাল উত্তপ্ত ঝঞ্ঝা বায়ু প্রবাহিত হলো। এ সময় এক ব্যক্তি কুফায় আসলো। তার মুদ্রাদোষ ছিল কোন কিছু ঘটলেই সে এসে বলতো, ‘হে আব্দুল্লাহ বিন মাসউদ! কিয়ামত এসে গেছে!’ (তো এই উত্তপ্ত ঝঞ্ঝা বায়ুর কারণেও সে অভ্যাস অনুযায়ী একই কথা বললো) আব্দুল্লাহ বিন মাসউদ হেলান দিয়ে বসেছিলেন। তার কথা শুনে তিনি সোজা হয়ে বসলেন এবং বললেন, কিয়ামত সংঘটিত হবে না, যতক্ষণ না উত্তরাধিকার সম্পদ অবণ্টিত থাকবে এবং যতক্ষণ না লোক গণীমতে আনন্দিত হবে না। অতপর তিনি তার হস্ত দ্বারা শাম (সিরিয়া, জর্দান ও ফিলিস্তীন) এর প্রতি ইংগিত করে বললেন, আল্লাহর শত্রুরা জড়ো হবে মুসলামনদের সাথে লড়াই করার জন্য এবং মুসলমানগণও তাদের সাথে যুদ্ধ করার জন্য সমবেত হবে। (এ কথা শুনে) আমি বললাম, (আল্লাহর শত্রু বলে) আপনার উদ্দেশ্য রোমান (খ্রীষ্টান) সম্প্রদায়? তিনি বললেন, হ্যাঁ এবং তখন ভয়াবহ

যুদ্ধ সংঘটিত হবে। মুসলিম বাহিনী একটি দল অগ্রে প্রেরণ করবে, তারা মৃত্যুর জন্য সামনে অগ্রসর হবে (এ সিদ্ধান্ত নিয়ে যে) জয়লাভ করা ব্যতিরেকে তারা পেছনে ফিরবে না। এরপর তাদের মাঝে যুদ্ধ হবে। যুদ্ধ করতে করতে রাত হয়ে যাবে। অতপর উভয় পক্ষের সৈন্য জয়লাভ করা ব্যতিরেকেই ফিরে আসবে। যুদ্ধের জন্য মুসলমানদের যে দলটি অগ্রে গিয়েছিলো তারা সকলেই শেষ হয়ে যাবে। পরবর্তী দিন মুসলিম বাহিনী মৃত্যুর জন্য একটি দল অগ্রে প্রেরণ করবে, তারা (সিদ্ধান্ত নিবে) বিজয় ব্যতীত প্রত্যাবর্তন করবে না। এদিনও তাদের মাঝে মারাত্মক যুদ্ধ হবে। অবশেষে সন্ধ্যা হয়ে যাবে। উভয় বাহিনী জয়লাভ করা ব্যতীতই নিজ নিজ শিবিরে ফিরে আসবে। যে দলটি অগ্রে গিয়েছিলো তারা সকলেই শেষ হয়ে যাবে। তৃতীয় দিন পুনরায় মুসলমানগণ মৃত্যুর জন্য একটি বাহিনী পাঠাবে, যারা (সিদ্ধান্ত নিবে) বিজয়ী না হয়ে ফিরবে না। সে দিন পৃথিবীর সর্বোত্তম অশ্বারোহী দলের অন্তর্ভুক্ত হবে তারা। এ যুদ্ধ সন্ধ্যা পর্যন্ত চলতে থাকবে। অবশেষে জয়লাভ করা ব্যতিরেকেই উভয় দল ফিরে আসবে। তবে মুসলিম বাহিনীর অগ্রবর্তী সেনাদলটি শেষ হয়ে যাবে। এরপর চতুর্থ দিবসে অবশিষ্ট মুসলমানগণ সকলেই যুদ্ধের জন্য সম্মুখ পানে এগিয়ে যাবে। সেদিন কাফিরদের উপর আল্লাহ তায়ালা পরাজয়-চক্র চাপিয়ে দিবেন। অতঃপর এমন যুদ্ধ হবে যা পৃথিবীতে কেউ

কোন দিন দেখবেনা অথবা জীবনে কেউ কখনো দেখেনি। এমনকি (যুদ্ধে নিহত ব্যক্তিদের) লাশের পাশ দিয়ে পাখী উড়ে যাবে। কিন্তু পাখী তাদেরকে অতিক্রম করার পূর্বেই মাটিতে পড়ে মরে যাবে। একশ মানুষ বিশিষ্ট একটি গোত্র থেকে মাত্র এক ব্যক্তি বেঁচে থাকবে। এমতাবস্থায় কেমন করে গনীমতের সম্পদ নিয়ে লোকেরা আনন্দ উৎসব করবে এবং কেমন করে উত্তরাধিকার সম্পদ বণ্টন করা হবে? মুসলমানগণ এ সময় আরেকটি ভয়াবহ বিপদের সংবাদ শুনতে পাবে। তাদের নিকট এ মর্মে একটি আওয়াজ আসবে যে, দাজ্জাল তাদের পেছনে তাদের পরিবার পরিজনের মধ্যে চলে এসেছে। এ সংবাদ শুনতেই তারা হাতের সমস্ত কিছু ফেলে দিয়ে রওয়ানা হয়ে যাবে এবং দশজন অশ্বারোহী ব্যক্তিকে সংবাদ সংগ্রাহক দল হিসাবে প্রেরণ করবে। রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেন, দাজ্জালের সংবাদ সংগ্রাহক দলের প্রতিটি ব্যক্তির নাম, তাদের বাপ-দাদার নাম এবং তাদের অশ্বের রং সম্পর্কেও আমি অবগত আছি। এ পৃথিবীর সর্বোত্তম অশ্বারোহী দল সেদিন তারাই হবে। –সহিহ মুসলিম, ২৮৯৯ (৬/৩৮৩ ইফা.)

তৃতীয় বিশ্বযুদ্ধে বিজয়ের পর মুসলমানদের তুরস্ক পর্যন্ত বিজয়াভিযান[

عن أبي هريرة، أن رسول الله صلى الله عليه وسلم، قال: «لا تقوم الساعة حتى ينزل الروم بالأعماق أو بدابق، فيخرج إليهم جيش من المدينة، من خيار أهل الأرض يومئذ، فإذا تصافوا، قالت الروم: خلوا بيننا وبين الذين سبوا منا نقاتلهم، فيقول المسلمون: لا، والله لا نخلي بينكم وبين إخواننا، فيقاتلونهم، فينهزم ثلث لا يتوب الله عليهم أبدا، ويقتل ثلثهم، أفضل الشهداء عند الله، ويفتتح الثلث، لا يفتنون أبدا فيفتتحون قسطنطينية، فبينما هم يقتسمون الغنائم، قد علقوا سيوفهم بالزيتون، إذ صاح فيهم الشيطان: إن المسيح قد خلفكم في أهليكم، فيخرجون، وذلك باطل، فإذا جاءوا الشام خرج، فبينما هم يعدون للقتال، يسوون الصفوف، إذ أقيمت الصلاة، فينزل عيسى ابن مريم صلى الله عليه وسلم، فأمهم، فإذا رآه عدو الله، ذاب كما يذوب الملح في الماء، فلو تركه لانذاب حتى يهلك، ولكن يقتله الله بيده، فيريهم دمه في حربته». صحيح مسلم : (2897)

"কিয়ামত কায়েম হবে না যতক্ষণ না রোমান সেনাবাহিনী (সিরিয়ার) 'আ'মাক' বা 'দাবিক' নগরীতে অবতরণ করবে। তখন তাদের মুকাবিলায় মদীনা হতে এর পৃথিবীর সে যুগের সর্বোত্তম মানুষের এক দল সৈন্য বের হবে। উভয় দল যুদ্ধক্ষেত্রে সারিবদ্ধ হবার পর রোমানরা বলবে, তোমরা ঐ সমস্ত লোককে পৃথক করে দাও, যারা আমাদের লোকদের বন্দী করেছে। আমরা তাদের সাথে লড়াই করবো। তখন মুসলমানরা বলবে, আল্লাহর শপথ! আমরা আমাদের ভাইদের থেকে কখনো বিচ্ছিন্ন হবো না। অবশেষে তাদের পরস্পর যুদ্ধ হবে। এ যুদ্ধে মুসলমানদের এক-তৃতীয়াংশ

সৈন্য পালিয়ে যাবে। আল্লাহ তায়ালা কখনো তাদের তওবা কবুল করবেন না। এক-তৃতীয়াংশ নিহত হবে। তারা আল্লাহ তায়ালার নিকট সর্বোত্তম শহিদ বলে বিবেচিত হবে। অবশিষ্ট এক-তৃতীয়াংশ বিজয়ী হবে। তারা আর কখনো ফিতনার শিকার হবে না। তারাই ইস্তাম্বুল জয় করবে। তারা নিজেদের তরবারি যায়তুন গাছে ঝুলিয়ে যুদ্ধ লব্ধ সম্পদ বণ্টন করতে থাকবে। এমতাবস্থায় তাদের মধ্যে শয়তান চিৎকার করে বলতে থাকবে, দাজ্জাল তোমাদের পেছনে তোমাদের পরিবার-পরিজনের মধ্যে চলে এসেছে। এ কথা শুনে মুসলমানরা সেখান থেকে বের হবে। অথচ এ ছিল মিথ্যা খবর (গুজব)। তারা শামে পৌঁছলে (বাস্তবেই) দাজ্জালের আবির্ভাব হবে। যখন মুসলিম বাহিনী (দাজ্জালের সাথে) যুদ্ধের প্রস্তুতি গ্রহণ করবে এবং সারিবদ্ধ হতে শুরু করবে তখন নামাযের জন্য ইকামাত দেওয়া হবে। অতপর ঈসা আলাইহিস সালাম অবতরণ করবেন এবং (সালাতে) তাদের ইমামত করবেন। আল্লাহর শত্রু (দাজ্জাল) তাকে দেখামাত্রই বিগলিত হতে থাকবে যেমন লবণ পানিতে গলে যায়। যদি ঈসা আলাইহিস সালাম তাকে এমনিই ছেড়ে দেন তবে সে বিগলিত হতে হতে ধ্বংস হয়ে যাবে। অবশ্য আল্লাহ তায়ালা ঈসা আলাইহিস সালামের হাতে তাকে হত্যা করবেন এবং তার রক্ত ঈসা আলাইহিস সালামের বর্শাতে তিনি তাদেরকে দেখিয়ে দিবেন।” -সহিহ মুসলিম, ২৮৯৭

(৬/৩৮০ ইফা.)

হাদিসের প্রয়োজনীয় ব্যাখ্যা:-

এক. উল্লিখিত হাদিসসমূহে যদিও মাহদীর আলোচনা সুস্পষ্টরূপে নেই, তবে যেহেতু ইমাম মাহদী দাজ্জাল ও ইসা আলাইহিস সালামের পূর্বেই আসবেন, আর হাদিসের বর্ণনা অনুযায়ী ইস্তাম্বুল বিজয়ের পরেই দাজ্জালের আবির্ভাব ঘটবে এবং তাকে হত্যার জন্য ইসা আলাইহিস সালাম অবতরণ করবেন, তাই তৃতীয় বিশ্বযুদ্ধে শামের ময়দানে খৃষ্টানদের পরাজিত করার পর তুরস্কের ইস্তাম্বুল বিজয় পর্যন্ত যে ইমাম মাহদীই নেতৃত্ব দিবেন এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই। এ কারণেই হাদিসের ভাষ্যকারগণ শেষোক্ত হাদিসের ব্যাখ্যায় বলেছেন, "হাদিসে বর্ণিত বাহিনী দ্বারা ইমাম মাহদীর বাহিনী উদ্দেশ্য।" (দেখুন, মিরকাত, মোল্লা আলী কারী, ৮/৩৪১২ দারুল ফিকর, বৈরুত, প্রথম প্রকাশনা, ১৪২২ হি. বাজলুল মাজহুদ, ১২/৩৪২ মারকাযুয শায়েখ আবুল হাসান, ১৪২৭ হি. তাকমিলাতু ফাতহিল মুলহিম, ৬/১৫২ দারুল কলম, প্রথম প্রকাশনা, ১৪২৭ হি. আলকাউকাবুল ওয়াহহাজ, দারুল মিনহাজ, প্রথম প্রকাশনা ১৪৩০ হি.)

দুই. শেষোক্ত হাদিসে যেহেতু বলা হয়েছে উক্ত বাহিনী মদীনা হতে বের হবে তো এ থেকে বুঝে আসে, তখন মক্কা-

মদীনা সহ মুসলিম বিশ্বের অধিকাংশ রাষ্ট্রই ইমাম মাহদীর শাসনাধীন থাকবে। হাদিস থেকে আমাদের এমনই বুঝে আসছে, তবে ভবিষ্যতের বিষয়াদী সম্পর্কে একমাত্র আল্লাহই তায়ালাই সঠিক জানেন।

তিন. "রোমানরা বলবে, তোমরা ঐ সমস্ত লোককে পৃথক করে দাও, যারা আমাদের লোকদের বন্দী করেছে।" হাদিসের এ অংশের ব্যাখ্যায় আলেমগণ বলেছেন, এর দ্বারা খৃষ্টানদের উদ্দেশ্য হলো, মুসলমানদের ধোকা দিয়ে বিভক্ত করে ফেলা। তারা মুসলমানদের প্রতি মহব্বত প্রকাশ করে বলবে, তোমাদের সাথে তো আমাদের কোন শত্রুতা নেই। আমাদের শত্রুতা তো তাদের সাথে যারা আমাদের দেশে হামলা করেছে এবং আমাদের লোকদের বন্দী করেছে। তোমরা তাদেরকে আমাদের হাতে ছেড়ে দাও, আমরা তাদের সাথে যুদ্ধ করবো, তোমাদের কিছুই বলবো না। (দেখুন, মিরকাত, ৮/৩৪১২ তাকমিলাতু ফাতহিল মুলহিম, ৬/১৫৪)

হাদিসের এ অংশটি আমাদের জন্য বড়ই শিক্ষনীয়। কেননা কাফেররা সবসময়ই মুসলমানদের বিভক্ত করার জন্য এ ধরণের চক্রান্ত করে আসছে, যেমন বর্তমানে কাফেররা নাদান মুসলমানদের সাথে ধোকাবাজী করে তাদের বুঝাচ্ছে,

‘তোমাদের সাথে তো আমাদের কোন শত্রুতা নেই। আমাদের শত্রুতা তো শুধু জঙ্গীদের সাথে, যারা আমাদের নিরাপত্তার জন্য হুমকি। আমরা শুধু তাদের সাথেই যুদ্ধ করবো। তোমাদের কোন ক্ষতি করবো না।’ বোকা মুসলিমরা তাদের এসব কথা মেনে নিয়েছে। বরং আরো একধাপ আগে বেড়ে তারাও এখন কাফেরদের সাথে ভালোবাসা-সম্প্রীতি গড়ে তোলা এবং এর মাধ্যমে পৃথিবীতে শান্তি (?) প্রতিষ্ঠা করার দিবা-স্বপ্ন দেখছে। অথচ আল্লাহর তায়ালা তাদের বারবার সতর্ক করে বলেছেন, ‘কাফেররা কখনোই মুসলিমদের প্রতি সন্তুষ্ট হবে না।’ ‘তারা সর্বদা মুসলিমদের সাথে যুদ্ধ করতেই থাকবে, যতক্ষণ না মুসলিমরা তাদের ধর্ম থেকে ফিরে যায়।’ ‘তারা চায় তোমরাও কুফরী করো, যেমনিভাবে তারা কুফরী করেছে।’ ‘তারা তোমাদের ক্ষতি করতে কোন ত্রুটি করবে না। তোমাদের কষ্টই তাদের পছন্দনীয়। তোমরা তাদের মহব্বত করলেও তারা তোমাদের মহব্বত করে না।’ ‘সুযোগ পেলে তারা তোমাদের কচুকাটা করবে। এমনকি তোমাদের ব্যাপারে কোন আত্মীয়তার সম্পর্ক কিংবা কোন শান্তিচুক্তির পরোয়াও করবে না। ওরা মিষ্টি মিষ্টি বুলি দিয়ে তোমাদের মন ভুলায়, কিন্তু তাদের অন্তর তোমাদের মহব্বত করতে অস্বীকার করে।’ (দেখুন, সূরা বাকারা, ১২০ ও ২১৭ সূরা আলে ইমরান, ১১৭-১১৮ সুরা নিসা, ৮৯ সুরা তাওবাহ, ৮

সুরা মুমতাহিনাহ, ২)

হায়, আফসোস, মুসলমানরা এত সুস্পষ্ট আয়াতগুলো কিভাবে ভুলে গেলো? আল্লাহর শপথ! যদি কোন দিন এই জঙ্গীরা শেষ হয়ে যায়, তাহলে কাফেররা মুসলমানদের পৃথিবীর বুক হতে নিশ্চিহ্ন করে দিবে। হয়তো তারা কৌশল হিসেবে ধীরে ধীরে এগোবে। কারণ তাদের ভয় থাকবে, তাড়াহুড়ো করলে মুসলিমরা ক্ষিপ্ত হয়ে আবারো জঙ্গী হয়ে যেতে পারে। কিন্তু আজ হোক বা কাল, তারা মুসলমানদের হত্যা বা ধর্মান্তরিত করার চেষ্টা করবেই।

চার. এখানে হাদিসের ভাষ্যকারগণ একটি প্রশ্ন তুলেছিলেন যে, ইস্তাম্বুল তো বর্তমান তুরস্কের রাজধানী, ৮৫৭ হিজরীতে উসমানী খলীফা মুহাম্মদ আলফাতেহ তা বিজয় করেছেন, তখন থেকে এ পর্যন্ত তা মুসলিমদের হাতে রয়েছে, তাহলে পুনরায় তা বিজিত হওয়ার কি অর্থ?
এর উত্তরে আল্লামা তাকী উসমানী রহ. বলেছেন, কেয়ামতের পূর্বে পুনরায় ইস্তাম্বুল কাফেরদের হাতে চলে যাবে, তাই ইমাম মাহদী এসে তা বিজয় করবেন। (দেখুন, তাকমিলাতু ফাতহিল মুলহিম, ৬/১৫৪)

আমাদের মতে হাদিসের এ ব্যাখ্যার পাশাপাশি সম্ভাব্য

আরেকটি ব্যাখ্যাও হতে পারে, তা হলো- যেহেতু তুরস্ক বর্তমানে সেক্যুলার আইন দ্বারা পরিচালিত হচ্ছে, এমনকি ইসলামী পার্টির নেতা এরদোগানও ঘোষণা দিয়েছে, তুরস্ক সেক্যুলার রাষ্ট্র। তাই সেক্যুলার ধর্ম অনুযায়ী সে মদ ও যিনার লাইসেন্স বহাল রেখেছে। সমকামিতার জন্য কওমে লুতকে ধ্বংসকারী মহান আল্লাহর সাথে চরম ধৃষ্টতা প্রদর্শন করে প্রকাশ্য সভায় সে ঘোষণা করেছে, "আমাদের সমকামীদের অধিকারের পক্ষে কথা বলতে হবে।" তাই হয়তো ইমাম মাহদী এসে এ ধরণের সেক্যুলার শাসকদের বিপক্ষে যুদ্ধ করে ইস্তাম্বুল জয় করবেন। ইতিপূর্বেও ইউসুফ তাশফীন, ইমাদুদ্দীন যিঙ্কি, নুরুদ্দীন যিঙ্কি, সালাহুদ্দীন আইয়ুবী ও অন্যান্য ন্যায়পরায়ন মুসলিম শাসকগণ ইসলাম ও মুসলিমদের কল্যাণার্থে জালেম ও ফাসেক শাসকদের থেকে ক্ষমতা কেড়ে নিয়েছেন। ইউসুফ বিন তাশফীন রহ. পরস্পর হানাহানিতে লিপ্ত স্পেনের শাসকদের থেকে ক্ষমতা কেড়ে নিয়েছিলেন। নুরুদ্দীন যিঙ্কী রহ. কাফেরদের সাথে আতাতকারী শাসক মুজিরুদ্দীন আতরক থেকে দিমাশক ছিনিয়ে নিয়েছিলেন। একই কারণে সুলতান সালাহুদ্দীন আইয়ুবী রহ. হালাব দখল করেছিলেন।(দেখুন, আলবিদায়া ওয়াননিহায়া, ১১/১২৯ ; ১১/২০৫ ; ১২/২১৭ ; ১২/২৮৯ দারুল হাদিস)

তেমনিভাবে তালেবান মুজাহিদগণ সোভিয়েতদের সাথে

জিহাদকারী আফগান কমান্ডারদের থেকে জোরপূর্বক ক্ষমতা কেড়ে নিয়েছিলেন, যারা সর্বত্র জুলুম-চাদাবাজী ও ত্রাসের রাজত্ব কায়েম করেছিলো। আফগানিস্তানের উলামায়ে কেরাম বরং পুরো মুসলিম বিশ্বের সত্যনিষ্ঠ আলেমগণ তাদের এ কাজকে সমর্থন করেছিলেন। সুতরাং কাফেরদের আজ্ঞাবহ দালাল ও মুরতাদ সেক্যুলার শাসকদের থেকে ইমাম মাহদী ক্ষমতা কেড়ে নিলে তাতে আশ্চর্য হওয়ার কিছুই নেই।

পাঁচ. শেষোক্ত হাদিসের বর্ণনা অনুযায়ী, তৃতীয় বিশ্বযুদ্ধ এতই ভয়াবহ হবে যে, ইমাম মাহদীর বাহিনী হতে একতৃতীয়াংশ পলায়ন করবে, যাদের তওবা কখনোই কবুল হবে না। সুতরাং প্রত্যেক মুসলমানের হাদিসের এই অংশটি গভীরভাবে চিন্তা করা উচিত। যারা এখন জিহাদ করছেন বা জিহাদের জন্য প্রস্তুতি নিচ্ছেন, তাদেরও সতর্ক থাকা উচিত, গুনাহ থেকে বেঁচে থাকার চেষ্টা করা উচিত। কারণ গুনাহ অনেক সময় জিহাদের ময়দান হতে পলায়নের কারণ হয়। উহুদের যুদ্ধে যারা পলায়ন করেছিলেন তাদের ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালা ইরশাদ করেন,

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا) (سورة آل عمران : 155

উভয় বাহিনীর পারস্পরিক সংঘর্ষের দিন তোমাদের মধ্য

হতে যারা পৃষ্ঠপ্রদর্শন করেছিলো, প্রকৃতপক্ষে শয়তান তাদেরকে কিছু কৃতকর্মের কারণে পদস্খলনে লিপ্ত করেছিলো। -সুরা আলে ইমরান, ১৫৫

তাই আমরা গুনাহ থেকে বেঁচে থাকার সর্বাত্মক চেষ্টা করবো। পাশাপাশি জিহাদের ময়দানে অটল থাকার জন্য আল্লাহ তায়ালা আমাদের যে দোয়াগুলো শিখিয়েছেন সেগুলোও গুরুত্বের সাথে নিয়মিত করবো । নিচের দোয়াগুলোর ব্যাপারে যত্নবান হবো ইনশাআল্লাহ,

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ. (سورة آل عمران: 147)

হে প্রভু! আমাদের গুনাহসমূহ এবং আমাদের দ্বারা আমাদের কার্যাবলীতে যে সীমালংঘন ঘটে গেছে তা ক্ষমা করে দিন। আমাদের দৃঢ়পদ রাখুন এবং কাফির সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আমাদেরকে বিজয় দান করুন। -সূরা আলে ইমরান, ১৪৭

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ (سورة البقرة 250)

হে প্রভু! আমাদের সবরের গুণ ঢেলে দাও এবং আমাদেরকে অবিচল-পদ রাখো আর কাফির সম্প্রদায়ের উপর আমাদেরকে সাহায্য ও বিজয় দান করো। -সূরা বাকারা,

২৫০

তেমনিভাবে সে মুসলিম ভাইদেরও ভেবে দেখা উচিত যারা ইমাম মাহদীর আসার অপেক্ষায় জিহাদ ও জিহাদের প্রস্তুতি হতে হাত গুটিয়ে বসে রয়েছেন এবং জোরগলায় বলছেন, ইমাম মাহদীর আসলে আমরাও জিহাদ করবো। যদি মেনে নেই যে, ইমাম মাহদী আসলে আপনারা মুহুর্তে দুনিয়ার সব ব্যস্ততা ঝেড়ে ফেলে, মাহদীর সাহায্যার্থে ছুটে যেতে পারবেন, কিন্তু একটু চিন্তা করে দেখুন, কোন ধরণের পূর্বপ্রস্তুতি ব্যতীত এভাবে জিহাদে গেলে যুদ্ধের ভয়াবহতায় আপনারা কতক্ষণ টিকে থাকতে পারবেন। যে মাহদীর বাহিনী হতে এক তৃতীয়াংশ যোদ্ধা পলায়ন করবে আপনারাও তাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবার আশংকা নেই তো? আপনারা হয়তো মনে করছেন, মাহদী আসলেই ক্যারিশমাটিক ভাবে মুসলমানরা কোন বাধাবিপত্তি ব্যতীতই জয়ী হতে থাকবে। কিন্তু ইমাম মাহদীর ব্যাপারে এধরণের কোন অস্বাভাবিক কারামাত বা ক্যারিশমা আমরা সহিহ হাদিসে পাই না। বরং আমরা যে সহিহ হাদিসগুলো উল্লেখ করেছি, তা থেকে স্পষ্টরূপে বুঝে আসে যে, ইমাম মাহদী স্বাভাবিকভাবেই যুদ্ধ করেই পৃথিবী জয় করবেন। এমনকি চারদিন পর্যান্ত তার অগ্রবর্তী বাহিনীর সবাই শহিদ হয়ে যাবে। যুদ্ধের ভয়াবহতায় পুরো বাহিনীর এক তৃতীয়াংশ

ময়দান ছেড়ে পালাবে। হ্যাঁ, মুজেযা বা কারামাত শুরু হবে ইসা আলাইহিস সালামের অবতরণের পর, তিনি কাফেরদের দিকে তাকালেই তারা মরে সাফ হয়ে যাবে। তেমনিভাবে জিহাদের ময়দানে আল্লাহ তায়ালার গাইবী মদদ সবসময়ই থাকে, ইমাম মাহদীর সময়ও থাকবে, এখনোও রয়েছে, যদিও আপনারা বর্তমান মুজাহিদদের সাথে সংশ্লিষ্ট সে কারামাতগুলো বিশ্বাস করতে চান না।